शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

नया साल

विनोबा

काल सतत दौड़ता रहता है। ठहरना जानता ही नहीं। काल को श्रुति ने दौड़ में शामिल घोड़े की उपमा दी है। दौड़ का घोड़ा जैसे अत्यंत गति से दौड़ता है वैसे काल भी तेजी से दौड़ता ही रहता है। काल की यह घुड़दौड़ कब शुरू हुई और उसका अंतिम मुकाम कौन-सा, ये प्रश्न ही हैं। इनके उत्तर नहीं। हम आगे बढ़ें या न बढ़ें, हमारा काल आगे बढ़ता ही रहेगा। ट्रेन में बैठने पर हम चलते हैं या नहीं इसका सवाल ही कहां ? चाहे तो हम नींद निकालें। नींद निकालें तो भी घंटे में 30-40 मील की गति से हम दौड़ते रहेंगे यह निश्चित है। जन्म के स्टेशन से हमने मृत्यु का टिकट निकाला है और काल की गाड़ी में बैठ गये हैं। अब जरा भी आगे न बढ़ें तो भी हमारा (उम्र का) बढ़ना चलता ही रहेगा।

संस्कृत में सूर्य को 'आदित्य' नाम है। 'दा' यानी देना। उसके उलटे 'आ-दा' यानी लेना। इस पर से आदित्य शब्द बना है, ऐसा श्रुति कहती है। अर्थात् आदित्य यानी 'ले जाने वाला' ऐसा अर्थ हुआ। आदित्य क्या ले जाता है ? कवि कहता है, 'आपकी आयु का एक टुकड़ा।' अस्तमान सूर्य हमारी आयु का एक टुकड़ा ले जाता है, यह हम सदा ध्यान में रखें। इसी हेतु से संध्या की विधि बतायी है। ज्ञानदेव बड़ी करुणा से कहते हैं, "अरे पगले, आयु छीज रही है तो जन्मदिन काहे का मनाते हो ? अरे, छीजन वृद्धि है क्या ?"

हां, छीजन में भी वृद्धि हो सकती है। लेकिन एक शर्त है। अगर आत्मा की वृद्धि होती हो तो आयु के क्षय को भी वृद्धि कह सकते हैं। इतना ही क्या, आत्मा की वृद्धि के लिए शरीर, इंद्रियां, प्राण और आयु को घिस डालना ही चाहिए। ऐसी घिसाई अच्छी है। इसे ही 'तप' कहते हैं। तप करते हुए अगर आयु घिस जाती है तो उसे जरूर वृद्धि मानें और जन्मदिन मनायें। उससे हम सचमुच ही बढ़ते हैं। उलटे हमारी बढ़ोत्तरी न होते हुए केवल काल बढ़ गया इसलिए वृद्धि मानना, काल की वृद्धि है, हमारी नहीं।

महावीर स्वामी को 'वर्धमान' कहते थे। वर्धमान यानी बढ़नेवाला। काल से झगड़कर वे वीर बने। वीर के महावीर बने। इसलिए यह नाम उन्हें शोभा देता है। शारीरिक आयु तो सबकी बढ़ती ही है। इसलिए सबको 'वर्धमान' नहीं कह सकते। आत्मा की आयु बढ़ानेवाला अर्थात् वर्धमान। वर्धमान पुरुष का क्षय यानी वृद्धि और मृत्यु यानी नया जीवन। वर्धमान पुरुष मरता है तो एकदम ऊंचा चढ़ता है। इसे ही स्वर्गगमन कहते हैं। तुकाराम सदेह स्वर्ग गये ऐसा कहते हैं। बहुत-से सत्पुरुष मरने पर जितना ऊंचा चढ़ते हैं उतना ही तुकाराम जीते-जी ही ऊंचे उठ ये - ऐसा इसका भावार्थ है। (7 जनवरी 1925, मधुकर, विनोबा साहित्य, खण्ड 12)